APPENDIX-I

मजदूर किसान मोर्चा - A PROFILE OF MAZDOOR KISAN MORCHA

प्रखण्ड स्तर का स्वरूप — AT BLOCK LEVEL

18 DEC 1989

प्रखण्ड/गठन	मोर्चा की सदस्यता	मुद्दा	संघर्ष/असर	नेतृत्व	टिप्पणी
माण्डू (हजारीबाग) गठन. 1988 -करीब 30 गांव में संपर्क - 10 गांव में सशक्त संगठन हैं. -कुछ गांव में संगठन निष्क्रीय हो गये हैं।	- प्रखण्ड बैठक में दस से बीस लोग आते हैं - कोयलरी या खनन की समस्या पर संघर्ष के दौरान 400 लोगो ने भाग लिया. - मोर्चा ने जो तरह की सदस्यता बनाया हैं उस पर स्पष्टता नहीं - मानद सदस्य/सामान्य सदस्य की परिकल्पना गांव के लोगो के मन में समझ नहीं पाते.	→ जमीन को गरीब लोगो ने (अपनी थी) कब्जा किया	→ नावाडी, गडगालो गांव में कब्जा करवाया गया सफलता मिली * विचार - जजेके.	→ जजेके कार्यकर्ता के नेतृत्व में कब्जा हुआ (सुधीर)	* आर्थिक स्थीती - ~~[illegible]~~ धान 1 बोरा व 100 रु. सदस्यता शुल्क - सालाना. कमजोर हैं. * जमीन संबंधी जानकारी ठीक से नहीं समझ की कमी/कार्यकर्ता की समझ कमजोर हैं.
		→ वन विनाश	→ जंगल सुरक्षा समीति का गठन.	→ स्थानीय युवा साथी	→ वन सुरक्षा में सफलता - कई गांव में
			→ वन विभाग के विरुद्ध कार्रवाई	→ स्थानीय नेतृत्व.	→ सफलतापूर्वक वन कर्मचारी पर दबाव.
		→ कोयलरी यूनियन	→ यूनियन बनाने का विचार	→ जजेके/मजदूर	→ समस्या के कारण इस समस्या को नहीं लिया।
		→ सरकारी योजना	→ जुलूस - प्रखण्ड कार्यालय पर योजना को लागू करने	→ जजेके कार्यकर्ता	→ कुछ लोगो को स्कीम (कुआं) का पैसा मिला.
				* पूर्व अध्यक्ष (प्रखण्ड स्तर का) निष्क्रीय हैं (कोयला चुराता था। - अब विशेश्वर मांझी अध्यक्ष हैं (शीक्षक)	* कुछ गांव में संगठन सशक्त होकर फिर कमजोर पड़ गया। गतीशीलता समाप्त (नावाडी, गडगाली) * जजेके पर निर्भरता ज्यादा है।

बरकट्ठा प्रखण्ड (हजारीबाग) कुल १६६ गांव - संपर्क ५० गांव - सशक्त संगठन	→ करीब ५० मानद सदस्य → मासिक प्रखण्ड मोर्चा के बैठक में 20-40 लोग आते हैं	→ जंगल सुरक्षा	→ गांव में वन सुरक्षा समीती को बनाया - जंगल पनपाने के काम को आदिवासी समूह ने किया	→ विचार जेजेके का था - पर स्थानीय लोग स्वयंस्फूर्ति से जंगल बचाते हैं	→ सफलता आशिंक रुप से
५ गांव - गठन 1979	- सदस्यता पर अस्पष्टता है.	→ गांव के झगडा निपटाना	→ गांव में लोक अदालत की तरह फैसला करवाना	→ जेजेके कार्यकर्ता कई गंभीर मामले में जेजेके कोर ग्रुप के सदस्य आते हैं	→ गांव में मोर्चा की अपनी ताकत नहीं बनी। इसी के चलते झगडा निपटाने का काम जेजेके कार्यकर्ता पर निर्भर हैं।
	- करीब २ वर्ष से नये सदस्य नहीं बने	→ भूमी पर कब्जा/ सामन्ती जमीनदार ने कब्जा किया उसे छुडवाने का मुद्दा	→ जेजेके + गांव वाले मिलकर राजेन्दरजी के नेतृत्व में कब्जा किया	→ जेजेके कार्यकर्ता संघर्ष में नेतृत्व कर रहे थे। ↓ प्रखण्ड स्तर का अध्यक्ष भी जे.जे.के. कार्यकर्ता हैं!!	→ एक साल भी नहीं जोता की जमीनदार ने फिर कब्जा ले लिया। इस विफलता का गहराई से विश्लेषण नहीं किया. * प्रखण्ड स्तर पर कोई कोष नहीं * पूर्णत: जेजेके कार्यकर्ता पर निर्भरता

बरही प्रखण्ड (हजारीबाग)

- गठन 1979
- 230 गांव
- सभी गांव में संपर्क
- 100 गांव में संगठन सशक्त हैं
- जेजेके। मोर्चा का सब से अच्छा व सशक्त संगठन इस में हैं.

- मानद सदस्य 150
- मानद सदस्यता शुल्क दस रुपये से घटाकर (सालाना) 5/- किया क्यों की लोग शुल्क दे नहीं पाते.
- मासिक प्रखण्ड बैठक में 50-60 सदस्य भाग लेते हैं

* दस बोरा धान सालाना लेवी के रूप में मोर्चा को मिलता हैं।
* महुआ की लेवी भी मिला 2 मन (Rs.320/-)

→ सरकारी काम पर निगरानी	→ हरिजन कालोनी को ठीक से बनवाया (प्रखण्ड कार्यालय पर दबाव) गांव 2 (राजगढ़)	→ नेतृत्व - खुद जेजेके कार्यकर्ता BDO के पास जा कर काम करवाया	→ सफलता तो मिली पर लोगो की पराधीनता बढ़ी. (प्रखण्ड मोर्चा अध्यक्ष जेजेके कार्यकर्ता हैं!!! (क्या दस साल (काम करने के बाद कोई नहीं था नेतृत्व)
→ झगड़ा निपटाना	→ गांव में छुटपुट झगड़े का स्थानीय निपटारा	→ जेजेके कार्यकर्ता रखे निपटाते हैं	→ जेजेके पर पराधीनता के लिये
→ मजदूरी समस्या वन विभाग का	→ JJK कार्यकर्ता ने वन कर्मचारी के पास संघर्ष. किया	→ जेजेके कार्यकर्ता	→ रेंजर का आश्वासन/काम होगा ?!
→ भूमी परचे	→ कार्यकर्ता ने संघर्ष किया - अकेले	→ जेजेके	→ परचे दिलवाया.
→ वन भूमी पर कब्जा	→ जेजेके + स्थानीय लोग.	→ जेजेके.	→ सुधीर सिंह के उपस्थिती में जोता गया। (उकसाना? निर्भरता)
→ भ्रष्टाचार	जुलूस (पर अभी भी संगठन सशक्त होने के बावजूद भ्रष्टाचार व्यापक रूप से चल रहा हैं।)(केला डाहर)	जेजेके.	* दस वर्ष के काम के बाद भी पराधीनता बढ़ी हैं।

इचाक (हजारीबाग) गठन -1984 -130 गांव - 50 में संपर्क - 25 गांव में संगठन अच्छा हैं - सशक्त हैं।	- मानद सदस्य २० - प्रखण्ड बैठक में २०-४० लोग आते हैं - सदस्यता के बारे में अस्पष्टता हैं।	→ राजस्व अधिकारी के अत्याचार के विरुद्ध	→ ब्लाक स्तर पर जुलुस/धरना - अधिकारी के खिलाफ DC के कार्यालय पर धरना - जांच का आदेश (पालन नहीं हुआ)	→ जेजेके → जेजेके स्थानीय लोग जुलुस व धरना में आये पर नेता जेजेके	* प्रखण्ड अध्यक्ष - 5 साल से निष्क्रीय हैं।
		→ IRDP कर्ज महिलाओं के लिये	→ BDO के साथ संघर्ष	→ जेजेके - महिला साथ थी	→ लोन/कर्ज मिला, follow up नहीं किया.
	* करीब २००/रु. सालाना चन्दा आता हैं - जुलुस, बैनर पर खर्च होता हैं	→ भूमी/जमीन	→ ब्लाक से - पर्चा मिला/नाप करवाया	→ जेजेके गांव के लोग साथ रहें.	→ शिलाडी में स्थानीय नेतृत्व उभरा हैं पर अन्य जगह नहीं.
		→ जमीनदार के दबाव पर.	→ स्कूल बनाने के लिये संघर्ष.	→ स्थानीय युवा	→ सफलता मिली
		→ सामन्त प्रवृत्ती पर	→ जनजागृती	→ जेजेके + लोग	→ सफलता मिली - जागृत हो गये व सामन्तवाद के विरुद्ध आवाज उठाते हैं. * कुछ गांव में स्थानीय नेतृत्व उभरा हैं।

बरकागांव (हजारीबाग)	- 10-से-60 तक प्रखण्ड बैठक में भाग लेने आये थे	→ शिक्षा	→ खी पाठशाला चलाते हैं	→ जेजेके का शिक्षक.	→ लोग बच्चों को पाठशाला भेजना नहीं चाहते.
- गठन 1986		→ ब्लाक की योजनाएं	→ लोगों को दिलवाया (कुआं, पम्प आदी)	→ जेजेके कार्यकर्ता के बल पर	→ पराधीनता
- गांव 80	- सदस्यता पर स्पष्टता नहीं.				
- संगठन 50 में		→ पुलिस जुल्म	→ घेराव/जुलूस	जेजेके + स्थानीय	→ पुलिस पर दबाव में सफलता.
- सशक्त संगठन करीब 20 गांव		→ कृषि विकास	→ ब्लाक के कृषि विकास को संगठन में लमसाया	→ जेजेके.	→ सरकारी कृषि विकास को जेजेके कार्यकर्ता प्रचार करना याने लोगों को खाद-दवा के चक्र में फंसाना
	* मोर्चा ने शिविर के लिये धान चन्दा किया	→ जुलुस/भ्रष्टाचार के खिलाफ	→ रैली/जुलूस	→ जेजेके.	
	- गरीबी की वजह से सदस्यता शुल्क देना संभव नहीं				* प्रखण्ड बैठक में गोविन्द मातो (जेजेके कार्यकर्ता को) को विधान सभा में उम्मीदवार बनाने का प्रस्ताव पारित (12.10.1989) !!
					* निर्भरता बनी है, समझ (कार्यकर्ता) की कमी.

पुरपू (हजारीबाग)	- सदस्यता 22 से (1985) घटकर 7 तक (1986) बैठक में	→ शिक्षा	→ रात्री पाठशाला	→ जेजेके चलाता हैं	→ अन्य संस्था (नेहरु युवक केन्द्र) भी चलाते हैं -duplication ?
- गठन 1984		→ ब्लाक योजनायें	→ ब्लाक से संघर्ष	→ जेजेके	→ निर्भरता
- सशक्त संगठन करीब दस गांव में	- मानद/साधारण सदस्य का कोई फरक लोगो के नहीं	→ भूमी	→ परचा के लिये CO से	→ जेजेके	→ सफलता / साथ निर्भरता
		→ जुलुस/रैली	→ ब्लाक में भ्रष्टाचार पर	→ जेजेके	
	- सदस्यता शुल्क को इकठ्ठा नहीं करते	→ वन कर्मचारी का शोषण आदिवासी पर	→ रोका	→ जेजेके	* प्रखण्ड स्तर का अध्यक्ष (शनीचर) जुझारू - Articulate हैं। नेतृत्व को संभाल सकते हैं
	* 1989 मेला के लिये 6 क्विं. धान चन्दा में आया	→ आदिवासी सम्मेलन/मेला	→ गांव में किया	→ जेजेके + स्थानीय.	* नेतृत्व को गांव स्तर पर उभरने का मौका नहीं मिलता.
	* 60/रु. जुलूस के लिये चन्दा मिला				
	* कोष संभव नहीं।				

चौपारण

- 1979 गठन - 150 गाँव - 60 में संपर्क	- मानद सदस्य 75 हैं - प्रखण्ड मोर्चा	→ पुलिस जुल्म	→ थाने में प्रदर्शन व जुलुस	→ स्थानीय लोग सशक्त हैं	→ पर कार्यकर्ता ने जबरन नेतृत्व अपने हाथ मे लिया सफलता तो मिली | पर पुलिस मुकद्दमा चल रहा हैं।
- 20 मे संचालन अच्छा हैं।	अनौपचारिक रुप से काम करता हैं	→ सरकारी योजना मे भ्रष्टाचार	→ जुलुस | घेराव	→ जेजेके	→ न भ्रष्टाचार रुका न ही योजना का लाभ लोगो को मिला।
- इस प्रखण्ड में पूर्णरुप से कार्यकर्ता नहीं हैं	* मोर्चा का कोष 700रुपये हैं	→ वन विभाग का अत्याचार	→ खिलाफत किया रोका	→ जेजेके	→ ने नेतृत्व खुदसे संभाला
	- जुलुस प्रदर्शन में खर्च	→ गैरमजरुआ जमीन (परती)	→ जुतवाया	→ जेजेके.	→ उकसाना / नेतृत्व संभालना।

* जेजेके कार्यकर्ता लोगो का निर्णय खुद लेते नेतृत्व भी संभालते। गाँव से नेतृत्व उभरना संभव नहीं।

5.2

पुरन्धु ब्लाक में चरकडुआ में बैठक के दौरान लोगों ने बताया "

लालू माँझी ने बताया " हम ने पहिले साल तो एक रुपया सदस्यता शुल्क दिया। फिर बाद में हम से पूछा नहीं तो कैसे देवें?" पता चला की शुल्क नहीं लिया है।

विष्णुगढ़
(हजारीबाग)

- संगठन 20 गांव में सशक्त हैं

- सदस्यता करीब 30-40 मानद सदस्य → मजदूरी → संघर्ष सरकारी संस्थाओं (DVC) से → जेजेके → न्यूनतम मजदूरी मिली

- सदस्यता का शुल्क 1 Re. प्रतिवर्ष का लेते हैं → जमीन कब्जा → गरीब का जमीन वापस करवाया संघर्ष / तीर कमान के साथ → स्थानीय लोग थे / पर रामलाल सुधीर जी का नेतृत्व था → "नेता" पर निर्भर संघर्ष?

* कोष 800 रु / था पर पटना रैली में खर्चा किया → ब्लाक से योजना → महिला को पैसा कुआं, लोन → जेजेके कार्यकर्ता ने दिलवाया → पराधीनता

- प्रखण्ड मोर्चा के अध्यक्ष एक विद्यार्थी हैं. → आदिवासी महिला पर अत्याचार → जुलूस निकाला → स्थानीय लोग व जेजेके कार्यकर्ता 'नेता' थे → झारखण्ड मुक्ति मोर्चा से प्रेरित.

→ झा. मोर्चा का शोषण → खिलाफत किया → लोगों का + जेजेके.

* संघर्ष तो लगातार रहा। पर नेतृत्व जेजेके कार्यकर्ता का रहा।
* आर्थिक / वैचारिक / नेतृत्व का सभी जेजेके पर निर्भरता.

(193)

2.00. जन जागरण केन्द्र

जेजेके का उद्देश्य प्रमुख रूप से शोषित लोगो के बीच काम करते शोषण विहीन समाज के निर्माण का रहा है।

— — — — — — — —

कार्यकर्ता समाज मे जुड़ै शोषण के अन्तरविरोध को उजागर करते हुए दबे लोगो के बीच ~~है काम~~ ~~काम करते~~ उनकी समझ को बडाने का काम करता है।

इस समझ के जरीये जो सामूहिक सोच और निर्णय लेने की प्रक्रिया बड़ती है। ~~इस~~ इस सामूहिक सोच को ठोस रूप देने और ~~उस की गतिशीलता को बनाए~~ के लिये मजदूर किसान मोर्चा का गठन किया जाता है। ~~जेजेके~~

इस ~~इस~~ मोर्चा का गठन जनआन्दोलन खडा करने की दिशा में पहिला कदम है। जेजेके का मानना है की स्वयंसेवी संस्थाओं का एक सीमित भूमिका होती है। जनजागृती का काम तो जेजेके करता है पर जनआन्दोलन का काम की करने में स्वयंसेवी संस्था को कठिनाई का सामना करना पड सकता है। इस जनआन्दोलन के काम के लिये, उस के नेतृत्व ~~के लिये~~ को उभरने की भूमिका को तय्यार करने का काम जेजेके कर रहा है।)

(As a vol. agency JJK's role is restricted to creating awareness. But this awareness leads to emergence of local leadership under MKM ~~that~~, eventually preparing for Peoples Movement)

3.1. अशिक्षा के वजह से गाँव की जनता को सरकारी सहायता - व कार्यक्रम के बारे में पता नहीं लगता। स्कीम के फारम भी नहीं भर सकते। इस के अलावा ~~क~~ ~~ष~~ इन अनपढ़ लोगों को शिक्षित लोग ठगते हैं - जिस से वे और मुसीबत में फंस जाते हैं। (Education/library is a power in itself that helps people to understand exploitation process. ~~Depriv~~ Illiteracy deprives ~~the rural~~ pop. many things to the rural population. In order to escape from this library is essential).

3.2. एक ही गाँव में जब एक से ज्यादा अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र खोला जाता है तो पढ़ने के लिये आनेवालों ~~लोगों~~ की संख्या घटती है। ~~बरकागाँव~~ चुरचू के कार्यकर्ता ने कहा "नेहरु युवक केन्द्र के स्कूल खुलने से हमारे केन्द्र पर बच्चे नहीं आते।"
— बरकागांव में भी बच्चे नहीं आते।